10

परमेश्वर का वास स्थान

परमेश्वर ने जब आदम को बनाया, तो उसने उसे शेष सृष्टि से अलग बनाया, इसमें उसने अपनी ही समानता के अनुसार उसे अपने आत्मिक स्वरूप पर बनाया। मनुष्य पर अपने सृजनहार के अनन्त स्वरूप की आत्मिक मोहर लगी है।

मनुष्यः परमेश्वर की विलक्षण रचना

वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि मानवीय जीवों तथा अन्य स्तनधारी जीवों में बहुत कम अन्तर पाया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मनुष्य एक जानवर है। परन्तु विज्ञान के सूक्ष्मदर्शक से भी मनुष्य की सभी बातों को देखा नहीं जा सकता। हमारे स्वभाव का एक अदृश्य भाग केवल परमेश्वर के वचन के ''सूक्ष्मदर्शक'' अर्थात माइक्रोस्कोप से ही देखा जा सकता है। हमारा यह भाग मानवीय आत्मा है, जो अनन्तकाल तक रहने वाली है। यह अनन्त अंश जो हमें खेत के पशुओं से अलग करता है, हमें पृथ्वी पर परमेश्वर का आत्मिक निवास स्थान बनने का विशेष सौभाग्य और अवसर भी देता है।

पशु-पृथ्वी के तत्व के लिए बनाए गए

परमेश्वर ने समुद्र की मछलियों को बनाया ताकि वे पृथ्वी के जल में रह सकें और बढ़ सकें, अपने विशेष तत्व में तैर सकें। उसने पक्षियों को बनाया कि वे ऊपर आसमान को भर दें और अपने तत्व में परों पर उड़ सकें (उत्पत्ति 1:20, 21)। परमेश्वर ने खेत के जन्तुओं को बनाया कि वे पृथ्वी पर घूम सकें (उत्पत्ति 1:24, 25)। जंगल में गर्जने वाले सामर्थी शेर से लेकर जंगल के सुन्दर हिरण अर्थात हर जीव को सर्वशक्तिमान और सबसे समझदार परमेश्वर के हाथों द्वारा बनाया गया ताकि यह अपने विशेष दायरे में रह सकें।

मनुष्य-एक आत्मिक तत्व के लिए बनाया गया

अन्त में मनुष्य को सृजा गया। खेत के जन्तुओं की तरह, मनुष्य को भूमि की मिट्टी से लेकर शारीरिक देह दी गई थी। शेष सृष्टि के विपरीत, परमेश्वर ने मनुष्य में सीधे एक अनन्त आत्मा फूंक दिया और ''आदम जीवता प्राणी बन गया'' (उत्पत्ति 2:7)। हमारे

लिए यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी सृष्टि में विशेष तत्व को भरने के लिए बनाया। उसने समुद्र की मछलियों को नीचे पानी में अपने तत्व को भरने के लिए बनाया। पक्षियों को उसने ऊपर आकाश में अपने तत्व को भरने के लिए बनाया। जीव-जन्तुओं को उसने पृथ्वी पर अपने तत्व को भरने के लिए बनाया। मनुष्य को परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप पर बनाया, ताकि हम अपने सृजनहार के रूप में उसके साथ संगति के आत्मिक तत्व को भर सकें।

विज्ञान हमें सिखाता है कि मनुष्य एक पशु ही है। बहुत से लोग शैतान के इस झूठ पर विश्वास करके पशुओं की तरह जीवन बिताते हैं। इस झूठ के विपरीत, परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि मनुष्य को पृथ्वी पर परमेश्वर का अपना निवास स्थान बनने के लिए उसके ही आत्मिक स्वरूप पर रचा गया था। जब तक हम अपने आत्मिक तत्व को नहीं पहचानते और उस तत्व में जीना आरम्भ नहीं करते, हम कभी भी जीवन के सही अर्थ और उद्देश्य को नहीं जान पाएंगे!

मनुष्य-अपने तत्व में खुश

परमेश्वर द्वारा आदम और हव्वा को अदन की वाटिका के उस सुन्दर स्वर्गलोक में रखने का दृश्य कितना महिमा भरा होगा! परमेश्वर द्वारा अपने सिद्ध प्रेम को मनुष्य के साथ और आदम और हव्वा का परमेश्वर के प्रेम को पति और पत्नी के रूप में एक-दूसरे के साथ बांटने का दृश्य कितना मोहक होगा। जब तक वे अपने सृजनहार से प्रेम करते और उसके अधीन रहे, उन्हें अपने ही आत्मिक तत्व में कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें सृजा था। परमेश्वर के साथ अपनी आत्मिक संगति के द्वारा, वे सिद्ध प्रेम तथा अपने सृजनहार के साथ अटूट संगति की आशिषों का आनन्द लेते थे।

मनुष्य-अपने तत्व से बाहर

एक बुरे दिन हव्वा ने परमेश्वर से अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा करना और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में से खाना चुन लिया। उसने मना किया गया वह फल अपने पति आदम को दिया और उसने भी उसे खाया। आदम और हव्वा ने अपने तत्व को छोड़ने और परमेश्वर के साथ अपनी सिद्ध आत्मिक संगति को तोड़ने की भयंकर पसन्द चुनी। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाकारिता से बढ़कर अर्थात प्रभु से ऊपर अपने आप को चुना। उन्होंने अपने जीवन पर नियन्त्रण करने के लिए आत्मा के बजाय, शरीर को अनुमति देना चुना। अपनी पसन्द के भयंकर परिणामस्वरूप, मनुष्य का प्राण देह की दासता के अधीन लाया गया; अब मनुष्य अपने सृजनहार के साथ आत्मिक एकता की आशीष का आनन्द नहीं ले सकता था। अदन की वाटिका से निकाले जाकर और जीवन के वृक्ष से दूर होकर, आदम और हव्वा ने परमेश्वर के साथ संगति से अपनी आत्माओं का दुखद अलगाव अनुभव किया। बिन पानी मछली की तरह आदम और हव्वा अपने तत्व से बाहर हो गए और परमेश्वर से आत्मिक अलगाव की मृत्यु मर गए।

मनुष्य द्वारा अपने तत्व को छोड़ने के भौतिक परिणाम

अदन की वाटिका में मनुष्य के पाप के बाद, मनुष्य जाति और से और भ्रष्ट होती रही। मनुष्य अपनी लालसाओं और इच्छाओं के लिए जीने में इतना फंस गया कि उत्पत्ति 6:5 में हम पढ़ते हैं, ''और यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है।'' यह कल्पना करना कठिन है कि मनुष्य का हृदय इतना भ्रष्ट हो गया था कि उसकी हर सोच अपने और अपनी लालसाओं और इच्छाओं पर केन्द्रित होती थी। मनुष्य ने अपने सृजनहार से मुंह फेर लिया था। उसने अपने हठी और स्वार्थी मार्ग में चलना चुन लिया था। हम पढ़ते हैं, ''और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ'' (उत्पत्ति 6:6)।

मनुष्य से परमेश्वर की केवल एक ही इच्छा थी कि वह उससे प्रेम रखे। मनुष्य को अपने परमेश्वर के साथ संगति और आत्मिक मेल का आनन्द लेने के लिए बनाया गया था, परन्तु मनुष्य ने अपने आत्मिक उद्देश्य को त्याग दिया। उसने परमेश्वर की इच्छा को नकारने और अपने हृदय में आने वाली हर बुरी लालसा और सुख विलास को अपना लिया। एक बार फिर, इसका दुखद परिणाम मनुष्य जाति पर परमेश्वर के क्रोध का बहाया जाना था। परमेश्वर ने मनुष्य जाति को नष्ट करने के लिए एक बहुत बड़ी जल-प्रलय भेजी, जिसमें केवल नूह और उसका परिवार ही बचाए गए। मनुष्य के पाप तथा विद्रोह के बावजूद, हमारे परमेश्वर ने मनुष्य जाति के साथ निकट आत्मिक सम्बन्ध बनाने की इच्छा नहीं छोड़ी।

इस्राएल: परमेश्वर की पुराने नियम की सृष्टि

जल-प्रलय के कई वर्ष बाद, अब्राम नामक एक विश्वासी मनुष्य परमेश्वर को भाया। परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदलकर अब्राहम कर दिया, जिसका अर्थ है ''दलों का पिता।'' परमेश्वर अब्राहम के निष्कपट विश्वास से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे उसके परिवार को बढ़ाकर लोगों की एक बड़ी जाति बनाने की आशीष देने की प्रतिज्ञा की। यह जाति जिसे यहूदी या इस्राएलियों के नाम से जाना जाता है, वह जाती थी जिसके द्वारा परमेश्वर ने बाद में संसार में अपने उद्धारकर्त्ता को भेजना था।

इसी दौरान, अब्राहम का परिवार मिस्र देश में लोगों की एक जाति के रूप में विकसित हुआ, जहां उन्होंने अपने आपको फिरौन के दासों के रूप में पाया। उनके जीवन उस काम से जो उन्हें करने के लिए विवश किया जाता था, दमन के कारण दुखी हो गए, परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम के साथ अपनी वाचा को स्मरण किया। अपने ईश्वरीय प्रबन्ध के द्वारा, परमेश्वर ने इस्राएलियों को दासता से सीनै पहाड़ तक ले जाने के लिए मूसा को खड़ा करके उसे सामर्थ दी। वहां परमेश्वर ने मूसा से भेंट कर उसे व्यवस्था दी, जिससे उसके लोगों का प्रबन्ध होना था। परमेश्वर ने मूसा को एक विशेष तम्बू, वेदी बनाने के लिए कहा। यह वेदी परमेश्वर की अपनी वेदी अर्थात उसके लोगों के बीच में उसका पवित्र स्थान बनना था। एक बार फिर, हम पवित्र परमेश्वर के प्रेम करने वाले हृदय को अपनी मानवीय रचना के साथ गूढ़ सम्बन्ध बनाने की लालसा करते देखते हैं। अपने प्रेम और करुणा के कारण, हमारे परमेश्वर ने एक प्रबन्ध

उपलब्ध करवाया, जिसके द्वारा वह अपने लोगों के बीच में रह सकता था और जिसके द्वारा वे सार्वजनिक आराधना के अपने कार्यों से उसके पास आ सकते थे।

परमेश्वर लोगों के मध्य में रहा

पहले तो, परमेश्वर वेदी में रहा। जंगल में इस्राएल के घूमने के चालीस वर्षों के दौरान, प्रभु की महिमा तम्बू के एक विशेष कमरे में भरी रहती थी जिसे परमपवित्र स्थान कहा जाता था। वेदी दिन के समय बादल से और रात के समय आग के खम्भे से ढकी रहती थी, जो उनके बीच में परमेश्वर की साक्षात उपस्थिति को याद दिलाती थी। जब भी वेदी से बादल हट जाता, यह इस बात का संकेत होता था कि इस्राएलियों को किसी दूसरी जगह जाना है। जहां भी बादल रुक जाता, वे परमेश्वर के तम्बू के आस-पास अपने तम्बू लगा लेते। लोग सिर झुकाए और गम्भीर खामोशी के साथ परमेश्वर की वेदी के पास आते थे, क्योंकि इस तम्बू को साधारण तम्बू मानना उसी समय मौत को बुलावा देना था!

फिर, परमेश्वर मन्दिर में वास करता था। सैकड़ों वर्ष बाद वेदी की जगह मन्दिर बना, जिसे राजा सुलैमान ने यरूशलेम में बनवाया था। वहां, परमपवित्र स्थान में, परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपना विशेष निवास स्थान बनाया जैसे उसने वेदी में बनाया था।

यह समृद्ध इतिहास हम से क्या कहता है? यह इस बात की घोषणा करता है कि इस्राएल का परमेश्वर उच्च और पवित्र परमेश्वर था, जिसने अपने प्रेम और तरस भरे महान हृदय से अपने लोगों के बीच में वास करना चाहा। परमेश्वर ऐसे लोगों की तलाश में था, जो बड़ी श्रद्धा तथा भय के साथ उसका आदर करते हुए, स्वर्ग और पृथ्वी का एकमात्र परमेश्वर जानते हुए उसके पास आएं।

फिर, परमेश्वर ने अपने पुत्र में वास किया। सदियों बाद संसार का यह भयदायक और सामर्थी परमेश्वर अपने इकलौते पुत्र यीशु के रूप में हमारे बीच में रहने के लिए स्वर्ग से नीचे आया। इस महान आश्चर्यकर्म पर टिप्पणी करते हुए जिसमें परमेश्वर मनुष्य बना, यूहन्ना ने लिखा, ''और वचन देहधारी हुआ [एक शारीरिक देह बना], और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के इकलौते की महिमा'' (यूहन्ना 1:14)।

तैंतीस वर्षों तक परमेश्वर ने अपने पुत्र की मानवीय देह के शारीरिक तम्बू में, पृथ्वी पर डेरा बनाए रखा। पृथ्वी पर की अपनी सेवकाई के दौरान, यीशु मसीह ''इम्मानुएल'' या ''परमेश्वर हमारे साथ'' था (मत्ती 1:23)। वह हमारे बीच में ''डेरा करने'' आया और अपनी शारीरिक देह के डेरे के द्वारा, परमेश्वर स्वयं पापी मनुष्यजाति के बीच में रहा। परमेश्वर अभी भी अपने लोगों के निकट आना चाहता था। वह केवल उनके *मध्य* ही नहीं बल्कि उन *में* रहना चाहता था।

पवित्र आत्मा के बारे में, यूहन्ना 14:17 में यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया, ''सत्य का आत्मा, ... तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।'' उसने उन्हें आगे समझाया कि वह उन्हें छोड़कर पिता के पास लौट जाएगा। ''मैं तुम से सच कहता हूं'' कहकर उसने बताया

कि ''मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा'' (यूहन्ना 16:7)। यीशु ने यह प्रतिज्ञा अपनी मृत्यु, गाड़े जाने, जी उठने तथा स्वर्गारोहण के बाद पूरी की। पिन्तेकुस्त के दिन, जैसा कि प्रेरितों 2 अध्याय में बताया गया है, पवित्र आत्मा ने प्रेरितों और कलीसिया को बपतिस्मा दिया, जो इस पृथ्वी पर परमेश्वर का नया निवास स्थान था और उसका अस्तित्व आश्चर्यकर्म के द्वारा हुआ!

कलीसिया: परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि

कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर ने अदन की वाटिका के समय से पृथ्वी पर अपना सबसे सिद्ध निवास स्थान बनाया है। यीशु के लहू के द्वारा धोए और पवित्र आत्मा के दान के वास से, प्रभु की कलीसिया परमेश्वर का नये नियम का मन्दिर अर्थात मसीह की आत्मिक देह, अर्थात इस पृथ्वी पर परमेश्वर का पवित्र निवास स्थान बन गया है (देखें इफिसियों 2:21, 22)।

संसार में से बुलाए हुए

जब कलीसिया के बहुत से लोग इस बात से जागृत होंगे कि कलीसिया को इस पृथ्वी पर परमेश्वर का पवित्र निवास स्थान होने के लिए मेमने के लहू से खरीदा गया है, तो वे अपनी उच्च बुलाहट के लिए भक्तिभाव से जीवन बिताने लगेंगे। तब उनके जीवन आत्म केन्द्रित नहीं, बल्कि मसीह केन्द्रित होंगे। फिर वे शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा और जीवन के अभिमान के लिए नहीं जीएंगे। मसीही लोगों को शैतान के राज्य के अंधकार में से परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य की रोशनी में बुलाया गया है।

परमेश्वर के पवित्र निवास स्थान में बुलाए गए

1 कुरिन्थियों 3:16 में पौलुस ने लिखा, ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?'' यह पता चलने पर कि उनकी देहें परमेश्वर का मन्दिर हैं और परमेश्वर का आत्मा उनमें वास करता है, मसीही लोगों की जीवन शैली में बहुत अन्तर आ जाएगा! विजयी मसीह जीवन तथा पराजित मसीही जीवन में अन्तर पवित्र आत्मा की उपस्थिति का न होना ही है, क्योंकि हर मसीही को सुसमाचार की आज्ञा मानने पर पवित्र आत्मा देने की प्रतिज्ञा दी गई है (प्रेरितों 5:32)। हमारे जीवनों में यीशु के वास का *ज्ञान* होने से इतना अन्तर पड़ता है। यह पता चलने पर कि यीशु हमारे जीवनों में है, हम ''अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित'' समझेंगे (रोमियों 6:11)। जब हमारे दैनिक जीवन में हमारे विश्वास का ऐसा व्यवहार होगा, ''महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, [हम] पर छाया'' करेगा (1 पतरस 4:14) और ''जीवित पत्थरों'' के रूप में हम ''आत्मिक घर बनते'' जाएंगे (1 पतरस 2:5)।

घर होने का एक ही उद्देश्य होता है कि उस में रहा जाए। परमेश्वर के घर का उद्देश्य पवित्र आत्मा को पृथ्वी पर निवास स्थान उपलब्ध कराना है। यीशु मसीह के सुसमाचार की

अच्छी खबर यह है कि आप और मैं यीशु के कलीसिया को अपने लिए लेने आने और उसे सदा के लिए अपनी दुल्हन बनाने से पहले अपने प्रभु के निवास स्थान बन सकें। वहां, परमेश्वर के सिंहासन के आस-पास, महिमा पाई हुई मसीह की कलीसिया को परमेश्वर की उपस्थिति और बिना भौतिक सीमाओं या सांसारिक रुकावटों के महिमा मिलेगी!

सारांश

मेमने के लहू से धोए गए लोगों को ही हमारे प्रभु के मन्दिर के जीवित पत्थरों के रूप में उसकी कलीसिया में मिलाया जाता है। यीशु के दोबारा आने पर केवल उसकी कलीसिया को ही स्वर्ग में ले जाया जाएगा। क्या आप परमेश्वर के मन्दिर का जीवित पत्थर हैं? यदि नहीं, तो उस पर भरोसा रखें और उसकी आज्ञा मानें। वह अपने पवित्र निवास स्थान को आप में ले लेगा, और आप उसकी प्रतिज्ञा का दावा कर सकेंगे: ''देखो, मैं सदा तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20)। जीवन के अन्त में आप उसकी विजय का दावा कर सकेंगे कि ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवंत करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57)। आमीन!